विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

रूपम कुमारी, वर्ग -दशम् विषय- हिंदी 🌷

दिनांक. - २९/६/२०

।। अध्ययन-सामग्री ।।.

बच्चों ,

पूर्ण विश्वास है कि आप स्वस्थ एवं सुरक्षित होंगे । चलिए , इसी भरोसे के साथ आज की कक्षा की शुरुआत करें ।

कल की कक्षा में आपने पढ़ा पाठ 11

बालगोबिन भगत 'जो कि एक रेखाचित्र है, जिसे रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखा गया । इसमें आप लेखक परिचय, रेखाचित्र क्या है, और पाठ भूमिका से परिचित हुए आज आप पाठ से परिचित होंगे-:.

पाठ -११ बालगोबिन भगत (रेखाचित्र).

बालगोबिन भगत मँझोले कद के गोरे चिट्टे आदमी थे । साठ से ऊपर के ही होंगे। बाल पक गए थे। लंबी दाढी या जटाजूट तो नहीं रखते थे, किंतु हमेशा उनका चेहरा सफेद बालों से ही जगमग किए रहता था । कपड़े बिल्कुल कम पहनते । कमर में एक लंगोटी मात्र और सिर में कबीरपंथी की- सी कनपटी टोपी । जब जाड़ा आता, एक काली कमली ऊपर से उठे रहते । मस्तक पर हमेशा चमकता हुआ रामानंदी चंदन ,जो नाक की एक छोर से ही, और औरतों के टीके की तरह शुरू होता । गले में तुलसी की जड़ों की एक बेडौल माला बांधे रहते ।

ऊपर की तस्वीर से यह नहीं माना जाए कि बालगोबिन भगत साधु थे । नहीं, बिल्कुल गृहस्थ ! उनकी गृहिणी की तो मुझे याद नहीं ,उनके बेटे और पतोहू को मैंने देखा था । थोड़ी खेती- बारी थी । एक अच्छा साफ -सुथरा मकान भी था ।

किंतु , खेती बारी करते, परिवार रखते भी, बालगोबिन भगत साधु थे- साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरने वाले कबीर को साहब मानते थे । उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते ।कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते । किसी से भी दो टूक बात करने में संकोच नहीं करते, ना किसी से ख्वामखाह का झगड़ा मोल लेते । किसी की चीज नहीं छूते, ना बिना पूछे व्यवहार में लाते । इस नियम को कभी-कभी इतनी बारीकी तक ले जाते कि लोगों को कुतूहल होता !-कभी वह दूसरे के खेत में शौच के लिए नहीं बैठते !वह गृहस्थ थे ;लेकिन उनकी सब चीज साहब की थी । जो कुछ खेत में पैदा होता सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते- जो उनके घर से चार कोस दूर पर था- एक कबीरपंथी मठ से मतलब -वह दरबार में भेंट रूप रख लिया तब प्रसाद रूप में जो मठ से मिलता,उसे घर लाते और उसकी से गुजर चलाते ।

इन सब के ऊपर ,मैं तो मुग्ध था उनके मधुर गान पर -जो सदा- सर्वदा ही सुनने को मिलते । कबीर के वे सीधे साधे पद, जो उनके कंठ से निकलकर सजीव हो उठते ।

आषाढ़ की रिमझिम है । समूचा गांव खेतों में उतर पड़ा है । कहीं हल चल रहे हैं ; कहीं रोपनी हो रही है । धान के पानी भरे खेतों में बच्चे उछल रहे हैं ।

शेष कल ....

दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें व अपनी कॉपी में लिखें तथा पठित पाठ के आधार पर बाल गोविंद भगत के वेशभूषा का वर्णन करें।

🍂🍂🍂🍂🍂🍂🍂🍂🍂🍂🍂
🍂🍂🍂🍂

घन्यवाद !